B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

Second INTERNAL TEST 20 -20

Name / ಹೆಸರು : Kavyashri. P. Patil

Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ : Date /ದಿನಾಂಕ : - -20

Subject/ವಿಷಯ : Hindi = 08 Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : IV Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ : U15KM21A0057

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 29/30

I

(3) छायावाद :

हिंदी साहित्य के आधुनिक चरण मे द्विवेदी युग के पश्चात हिंदी काव्य की जो धारा विषय वस्तु की दृष्टि से स्वछंद प्रेमभावना, प्रकृति मे मानवीय क्रिया - कलापो तथा भाव- व्यापारो के आरोपण और कला की दृष्टि से लाक्षणिकता प्रधान नवीन अभिव्यजना पद्धति को लेकर चली, उसे 'छायावाद' कहा गया।

डॉक्टर नगेंद्र के अनुसार, 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म के विद्रोह को छायावाद माना जाता है। प्रकृति पर चेतना के आरोप को भी छायावाद कहा गया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'प्रस्तुत' के स्थान पर उनकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप मे अप्रस्तुत कथन' को छायावाद माना है

विशेषताएं

* व्यक्तिवाद की प्रधानता :
छायावाद मे व्यक्तिगत भावना ओ की प्रधानता है। वहाँ कवि अपने सुख - दुख एवं हर्ष - शोक को ही वाणी प्रदान करते हुए खुद को अभिव्यक्त करता है।

* श्रृंगार भावना :
छायावादी काव्य मुख्यतया श्रृंगारी काव्य है किंतु उसका श्रृंगार अतींद्रिय सूक्ष्म श्रृंगार है।

* प्रकृति का मानवीकरण :
छायावादी कवियों ने प्रकृति को अनेक रूपों मे देखा है। कहीं प्रकृति को नारी के रूप मे देखा है

* अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम :
इस अज्ञात सत्ता को कवि कभी प्रेयसी के रूप मे तो कभी चेतन प्रकृति के रूप मे देखता है।
छायावाद की यह अज्ञात सत्ता ब्रह्म से भिन्न है।

* नारी के प्रति नवीन भावना :
छायावाद मे श्रृंगार और सौंदर्य का संबंध मे नारी से है। रीतिकालीन नारी की तरह छायावाद नारी प्रेम की पूर्ति का साधन मात्र नहीं है।

प्रमुख कवि

* जयशंकर प्रसाद - कामायनी
* महादेवी वर्मा - नीरजा, निहार
* सुमित्रानंदन पंत - पल्लव, गुंजन
* सूर्यकांत त्रिपाठी - अनामिका, गीतिका

(7) 'प्रवासी साहित्य'

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श किन्नर विमर्श के साथ प्रवासी विमर्श के मुद्दे भी उतना आज बहुत ही आवश्यक हो गया है।

शब्दार्थ : 'प्रवास' शब्द 'वास' धातु में उपसर्ग लगाने से बना है। वास का प्रयोग निवास करने के अर्थ में किया जाता है और 'प्र' उपसर्ग लगाने से इस का अर्थ बदल जाता है। इस प्रकार से 'प्रवास' का अर्थ बन जाता है।

प्रवास शब्द का अर्थ है, विदेश गमन या विदेश यात्रा जिसका अर्थ है किसी दूसरे देश में रहनेवाला व्यक्ति प्रवासी है। प्रवासी ऐसे लोगों का एक बड़ा समुह है जिनकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थलों में स्थानांतरित हो गया है।

* डॉ रामदरश मिश्र - प्रवासी साहित्य ने हिंदी को एक जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।

* डॉ कृष्ण के विदेशी साहित्य की विशेषताएं

* स्थानीय परिवेश एवं वातावरण का उल्लेख

* स्थानीय सामाजिक मूल्यों एवं विश्वों के समीकरणों की प्रस्तुति।

* देश-विदेश के जीवन-मानव मूल्यों का चित्रण।

* देश-विदेश जनित भिन्नताओं का चित्रण

* परिवार , परिवेश, प्रियजन तथा बिछोह कि पीडा का चित्रण

* स्थानीय संस्कृति संस्कारो की झलक

प्रवासी हिंदी साहित्य न केवल पूरी दुनिया में अपना स्थान बनाया है बल्कि अपनी पहचान भी बना चुका है। प्रवासी साहित्य एक स्थापित साहित्य है। जिसे नकार नहीं किया जा सकता है।

19

II

② आंचलिक उपन्यास

जहाँ किसी क्षेत्र विशेष को केंद्र बनाकर रचना की जाये वहाँ के रहन-सहन, रीति-रिवाज व्यवहार, गुण-दोष वेश-भूषा, सामाजिक जीवन आदि के विस्तृत वर्णन के साथ स्थानीय बोलियों का प्रभाव हो उस रचना को आंचलिक कहते है।

आंचलिक उपन्यासों में सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक जीवन का चित्रण भी प्रमुखता से होता है।

डा विश्वम्भार उपाध्याय - आंचलिक उपन्यास उन उपन्यासों को कहते है, जिनमें किसी विशेष जनपद अंचल क्षेत्र के जन जीवन का समग्र चित्रण होता

आंचलिक उपन्यासों का विषयक्षेत्र विवाद का बना हुआ है राजेंद्र अवस्थी, महेन्द्र चतुर्वेद आदि शहरी, मोहल्ले या कस्बों के जीवन को अभिव्यक्ति देने वाले उपन्यासों के भी आंचलिक कहना चाहिए। जब कि डा हरदयाल, डा रामदरश मिश्र आदि ग्राम एवं विशिष्ट अंचलों को ही इन उपन्यासों का विषय क्षेत्र मानते है।

प्रमुख कवि

* नागार्जुन - बलचनमा, नई पौध

* फणीश्वरनाथ - मैला आंचल, परती परिकथा

* रामदरश मिश्र - पानी के प्राचीर

① प्रगतिवाद

प्रगतिवाद भौतिक जीवन की उदासीन आत्मनिष्ठ सूक्ष्म, अंतर्मुखी प्रवृत्ति के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप या लोक के विरुद्ध स्थूल जगत की सामाजिक प्रतिक्रिया है। यह कलावादी कला की अपेक्षा जीवन को, व्यक्ति की अपेक्षा समाज को सर्वानुभूति को प्रधानता देती है।

विशेषताएँ

* शोषकों के प्रति विद्रोह और शोषितों के प्रति सहानुभूति - प्रगतिवादी कवियों ने किसानों, मजदूरों पर किए जाने वाले पूंजीपतियों के अत्याचार के प्रति अपना विरोध किया है।

* आर्थिक व सामाजिक समानता पर बल - इस युग के कवियों ने आर्थिक एवं सामाजिक समानता पर बल देते हुए निम्न वर्ग समाप्त करने पर बल दिया।

* नारी शोषण के विरुद्ध मुक्ति का स्वर - प्रगतिवादी कवियों ने नारी को उपभोग की वस्तु नहीं समझा वरन उसे सम्मानजनक स्थान दिया है।

* प्रतीकों का प्रयोग - अपनी भावनाओं को स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए इस काल के कवियों ने प्रतीकों का सहारा लिया है।

(10)

प्रमुख कवि

* नागार्जुन - युगधारा
* केदारनाथ अग्रवाल - युग की गंगा
* त्रिलोचन - धरती
* रांगेय राघव - पांचाली

B. L. D. E. Association's

S. B. ARTS & K. C. P. SCIENCE COLLEGE, VIJAYAPUR

First INTERNAL TEST 2022 -2023 .

Name / ಹೆಸರು : Heena. D. Patil. Roll No./ಸ್ಥಳಾಂಕ : 92. Date /ದಿನಾಂಕ : 20/1/-2023.

Subject/ವಿಷಯ : Optinal Hindi. II nd हिन्दि Semester/ಸೆಮಿಸ್ಟರ್ : V Exam Seat No / ಪರೀಕ್ಷೆ ಸ್ಥಳಾಂಕ :

Invigilator's Signature / ಕೊಠಡಿ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಕರ ಸಹಿ Signature of Evaluator / ಪರೀಕ್ಷಕರ ಸಹಿ Marks obtained/ ಪಡೆದ ಅಂಕಗಳು 18/20

I

1) 2) दिल्ली और मेरट

2) 3) १६५०

3) 3) इशां अल्ला खान

4) 1) प्रेमचंद

5) 1) इंदुमती .

II

1). हिन्दी गद्य का विकास .

प्रस्तावन :-

हिन्दी साहित्य में सबसे पहले गद्य का विकास हुआ है. अलग कवियों अलग भाषा में अपनी सरल भाषा के आधार पर गद्य का विकास किया है. गद्य ~~भाग~~ में प्रमुख तिन भागों में गद्य का विकास किया गया है. —>

1) राजस्थानी गद्य
2) ब्रजभाषा गद्य
3) खड़ीबोली गद्य.

यह तिन भागों में गद्य का विकास किया गया है गद्य भाग के कवियों ने अपनी सरल बोली में और लोगों की समज में आने जाने वाली भाषा में इन तिनों (3) गद्य का विकास किया गया है.

1) राजस्थानी गद्य.

सबसे पहले गद्य भाषाओं में से राजस्थानी गद्य का विकास होता है. राजस्थानी गद्य का विकास सन् 945 ई में किया गया है. राजस्थान में सरल भाव में बोली जाने वाली भाषा है. और राजस्थानी गद्य का विकास डिंगल और पिंगल भाषा में गद्य की रचना होती है. राजस्थानी गद्य से हिन्दी गद्य का विकास होने लगता है. इससे हिन्दी गद्य के विकास आरंभ होने लगता है.

2) ब्रजभाषा गद्य.

ब्रजभाषा गद्य का विकास 1350 से आरंभ होता है. यह हिन्दी में अधिक बोली जाने वाली और सरल भाव में बोली जाने वाली भाषा है. इसी भाषा के प्रयोग से हिन्दी गद्य रचित हुआ और यह सरल भाषा होने के कारण हिन्दी गद्यों का विकास बढ़ने लगता है.

3) खड़ीबोली गद्य

खड़ीबोली गद्य का विकास 1370 में होता है. यह भाषा दिल्ली मे और मेरठ में अधिक उपयोग किये जानेवाली भाषा है. गंगराज के स्थान खड़ीबोली हिंदी भाषा का प्रयोग होता था. खड़ीबोली हिन्दी से ही अधिक से अधिक हिन्दी गद्यों का विकास हुआ है ऐसा इतिहासिक कवियों का कहना है. माना जाता है. 1370 से अबतक खड़ीबोली हिन्दी भाषा का अधिक उपयोग किया जाता है. इससे हिन्दी गद्यों का विकास होने लगता है. क्यों कि खड़ीबोली गद्य में

रोज़ाना इस्तेमाल किये जाने वाले शब्दों का उपयोग होता है. इसलिए हिंदी गद्यों का विकास प्राप्त हुआ है.

हिन्दी गद्य के प्रमुख कवि

1) सदुल मिश्र
2) इशा अल्लाह खान
3) लल्लू लाल
4)

यह गद्य के विकास के प्रमुख हिन्दी के कवि कहलाते हैं.

उपसंहार :- हिन्दी में गद्य को प्रमुख स्थान मिला है. गद्य का अधिक विकास होने के कारण इसका उपयोग भी अधिक से अधिक किया जाता है.

III

२) उपन्यास

प्रस्तावना :-

उपन्यास शब्द उप और न्यास इसे दो अलग-अलग शब्द से उपन्यास शब्द का आरंभ हुआ है. उपन्यास शब्द का अर्थ है कि पास रखी हुई वस्तु. यानी अपनी आस पास कि वस्तु का विवरण करना / समझना होता है. उपन्यास में प्रमुख तिन युग आते है :->

1) प्रेमचंद युग
2) प्रेमचंदोत्तर युग.
3) प्रेमचंद द्वोत्तर युग .

इस तरह ३ युगों में उपन्यास की रचना कि गई है. उपन्यास के प्रमुख रचनाकार प्रेमचंद कहलाते है. इन्होंने सबसे पहले उपन्यास की रचना का आरंभ किया. इनके बाद अनेक रचनाकारों ने भी उपन्यास की रचना करते है.

उपसंहार :-

उपन्यास की रचना से हिन्दी की उपयोगता अधिक होती है. अपने आस पास की वस्तु विषय का संग्रह इस उपन्यास में किया जाता है.